कुछ अस्पष्टता-सी आ

डॉ. हट्टन के विचार (Views of Dr. J. H. Hutton)

आरम्भ में ही यह कहना उचित होगा कि डॉ. हट्टन ने भारत की प्रजातियों का कोई पृथक् सर्वेक्षण नहीं किया है। सन् 1931 की गणना के अध्यक्ष होने के नाते डॉ. हट्टन के सभी निष्कर्ष अपने साथियों और विशेषकर डॉ. गुहा द्वारा किये गये अध्ययनों पर ही आधारित हैं। इस प्रकार इन निष्कर्षों को प्रस्तुत करने का तो उन्हें कोई श्रेय नहीं है लेकिन विषय को सरल क्रम में समझाने तथा प्रजातीय अध्ययन को एक निश्चित दिशा देने में आपने अवश्य महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ. हट्टन के अनुसार भारत की जनसंख्या में पाये जाने वाले प्रजातीय तत्वों के वर्गीकरण और उनके क्रम को निम्नांकित प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है :

(1) **नीग्रिटो** (Negrito)—डॉ. हट्टन के अनुसार नीग्रिटो भारत की सबसे प्राचीन प्रजाति है। इसका मूल स्थान 'मैलिनीशिया' है जहाँ से यह भारत के अनेक भागों में फैल गयी। वर्तमान समय में इस प्रजाति की विशेषताएँ भारत में लगभग समाप्त हो गयी हैं।

(2) **प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड** (Proto-Australoid)—यह आस्ट्रेलॉयड प्रजाति की सबसे प्राचीन शाखा है जिसने नीग्रिटो के बाद भारत में प्रवेश किया। कुछ विद्वानों ने इसी शाखा को पूर्व-द्रविड़ (Pre-Dravidian) भी कह दिया है। इसने सम्भवतः पैलेन्सटाइन की ओर से भारत में प्रवेश किया।

(3) **भूमध्यसागरीय** (Mediterranean)—प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड के बाद भूमध्यसागरीय प्रजाति का यहाँ प्रवेश हुआ। यह प्रजाति प्रमुख रूप से दो भागों में विभाजित होकर यहाँ आई। प्रथम को हम 'प्राचीन भूमध्यसागरीय प्रजाति' कहते हैं जिसे खेती करने का ज्ञान था। दूसरी शाखा ने पूर्वी यूरोप से यहाँ प्रवेश किया। यह धातुओं से विभिन्न प्रकार के उपकरण बनाने और नगरीय सभ्यता का विकास करने में कुशल थी। डॉ. हट्टन का विचार है कि इस दूसरी शाखा ने ही भारत की सिन्धु सभ्यता का निर्माण किया। इसी शाखा को कुछ विद्वान 'द्रविड़ प्रजाति' कहते हैं।

(4) **अल्पाइन प्रजाति की आर्मीनॉयड शाखा** (Arminoid Branch of Alpine)—भारत में पाये जाने वाले चौड़े सिर के लोगों को डॉ. हट्टन ने अल्पाइन प्रजाति की आर्मीनॉयड शाखा कहा है। यह प्रजाति ईसा से 3000 वर्ष पूर्व पामीर की पहाड़ियों की ओर से भारत पहुँची। यह शाखा सम्भवतः द्रविड़ भाषा बोलती थी।

(5) **मंगोलॉयड** (Mongoloid)—इस प्रजाति ने भारत के उत्तर-पूर्वी भाग से यहाँ प्रवेश किया और बाद में दक्षिण की ओर बढ़ते हुए बंगाल की खाड़ी तक फैल गयी।

(6) **इण्डो-आर्यन** (Indo-Aryan)—डॉ. हट्टन के अनुसार यह प्रजाति ईसा से केवल 1500 वर्ष पहले भारत में आई और इसी ने भारत में वैदिक-सभ्यता का निर्माण किया। प्राचीनता के दृष्टिकोण से सम्भवतः इस प्रजाति से सम्बन्धित डॉ. हट्टन के निष्कर्ष सबसे अधिक सन्देहयुक्त हैं। इससे तो यही सिद्ध होता है कि भारत की वैदिक सभ्यता का इतिहास 3000 वर्ष से भी कम प्राचीन है। यह निष्कर्ष किसी प्रकार भी प्रामाणिक नहीं है।

डॉ. मजूमदार के विचार (Views of Dr. D. N. Majumdar)

भारत के प्रसिद्ध मानवशास्त्री डॉ. डी. एन. मजूमदार ने भारत की प्रजातियों का कोई विस्तृत विवरण तो नहीं दिया है लेकिन यहाँ की मूल प्रजाति के विषय को लेकर आपने महत्वपूर्ण निष्कर्ष दिये हैं। डॉ. मजूमदार डॉ. हट्टन तथा गुहा के इस निष्कर्ष से बिल्कुल भी सहमत नहीं हैं कि 'नीग्रिटो' भारत की मूल प्रजाति है। आपके अनुसार भारत की मूल प्रजाति केवल 'प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड' ही है। गुहा और हट्टन ने जिन आधारों पर नीग्रिटो तत्व के मौलिक होने की बात कही है वे इतने भ्रमपूर्ण हैं कि उनमें विश्वास नहीं किया जा सकता। डॉ. मजूमदार ने ऐसे अनेक तर्क दिये हैं जिसके आधार पर 'नीग्रिटो' के स्थान पर 'प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड' प्रजाति का प्राचीनतम होना सिद्ध होता है :

(1) **भारत में नीग्रिटो प्रजाति के लक्षणों का पूर्णतया अभाव है।** यदि नीग्रिटो प्रजाति सबसे अधिक प्राचीन होती तब भारत के विभिन्न भागों में इसके तत्व बहुतायत से पाये जाते। इसके विपरीत, वास्तविकता यह है कि अण्डमान द्वीप को छोड़कर भारत के किसी भी हिस्से

में नीग्रिटो प्रजाति के लक्षण देखने को नहीं मिलते। इस तथ्य को रिजले ने भी स्वीकार करते हुए कहा है कि अण्डमान के व्यक्तियों में पाये जाने वाले प्रजातीय तत्वों के आधार पर भारत के प्रजातीय इतिहास को स्पष्ट नहीं किया जा सकता। ऐतिहासिक रूप से भी नीग्रिटो प्रजाति कभी इतनी साहसी नहीं रही है कि वह भारत जैसे विशाल देश का आधार बन जाती। विलियम टर्नर ने अनेक कपालों की माप करके भी यही निष्कर्ष दिया है कि भारत की जनसंख्या में नीग्रिटो तत्व का कोई हाथ नहीं है बल्कि इनसे प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड प्रजाति की प्रधानता होने का संकेत मिलता है।

(2) डॉ. गुहा और हट्टन ने जिन आधारों पर नीग्रिटो तत्व को महत्व दिया है, वे गलत हैं। गुहा ने मध्य प्रदेश और दक्षिण भारत की प्रजातियों में नीग्रिटो तत्व होने की बात कही है। इनके समर्थन में वेंकटाचार ने लिखा है कि मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति में नीग्रिटो तत्व की प्रधानता है। इसी प्रकार एल. ए. के. अय्यर ने ट्रावनकोर कोचीन की कादर, पुलय, उराली और कनिकर जनजातियों में कुंचित और घुँघराले बाल देखकर यह निष्कर्ष दे दिया कि उनमें नीग्रिटो तत्व की प्रधानता है। वास्तव में इनमें से कोई भी **निष्कर्ष वैज्ञानिक आधार पर प्रमाणित नहीं किये जा सकते**। जिन स्थानों पर नीग्रिटो तत्व होने की बात कही गयी है, उन्हीं स्थानों की जनजातियों का अध्ययन करने के पश्चात् श्री अयप्पन का कथन है कि इनमें नीग्रिटो तत्व की सम्भावना करना बिल्कुल भ्रान्ति है। केवल बालों की बनावट के आधार पर ही किसी समूह को नीग्रिटो प्रजाति से नहीं जोड़ा जा सकता। इन स्थानों पर अधिकांश जनजातियों की शारीरिक विशेषताएँ प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड के समान हैं और जिन विशेषताओं को कुछ व्यक्तियों ने नीग्रिटो तत्व कह दिया वे भी वास्तव में प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड से ही सम्बन्धित हैं।

(3) यदि हम **रक्त-समूह** (blood group) के आधार पर अध्ययन करें, तब भी भारत में नीग्रिटो प्रजाति का होना सिद्ध नहीं होता। नीग्रिटो प्रजाति में 'B' रक्त-समूह की प्रधानता होती है जबकि भारत की अधिकतर जनजातियों में 'A' रक्त-समूह की प्रधानता है। केवल कुछ ही जनजातियाँ ऐसी हैं जिनमें 'B' रक्त की प्रधानता है जैसे, मुण्डा और भील आदि, लेकिन इन जनजातियों में नीग्रिटो प्रजाति के कोई भी अन्य लक्षण न होकर सभी लक्षण प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड प्रजाति से मिलते-जुलते हैं। इस आधार पर भी भारत में प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड तत्वों की प्राचीनता होने का संकेत मिलता है।

(4) यदि हम वर्तमान की समस्याओं में न उलझकर अतीत को अपने अध्ययन का आधार मानें तब भी नीग्रिटो की अपेक्षा प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड तत्व अधिक प्राचीन प्रमाणित होता है। **मोहनजोदड़ो की खुदाई** में जो नरकंकाल मिले हैं, उनमें से कुछ तो प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड प्रजाति के हैं और कुछ भूमध्यसागरीय प्रजाति के, लेकिन नीग्रिटो प्रजाति का एक भी नरकंकाल नहीं खोजा जा सका। यदि नीग्रिटो यहाँ की सबसे प्राचीन प्रजाति होती तब इन अवशेषों में उनके कुछ न कुछ प्रमाण अवश्य उपलब्ध होते।

उपर्युक्त समस्त प्रमाणों के आधार पर डॉ. मजूमदार के अनुसार 'प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड' अथवा 'पूर्व-द्रविड़' प्रजाति को ही भारत की सबसे प्राचीन प्रजाति मानना उचित प्रतीत होता है।